गुरु नानक जी से पहले का भारत

भारत में बुद्ध धर्म अपने शिखर पर पहुँचने के बाद कमजोर होना शुरू हो गया। बुद्ध के बुत और बोधिसत्व बहुत ही आम हो गये और उनके मंदिरों में स्थापित किये गये। बोधि साधू अहिंसा और प्रतिरोध न करने की शिक्षा देते थे, जिसने लोगों को अपनी रक्षा के लिए भी लड़ने से असमर्थ बना दिया।

जब बुद्ध धर्म को भारत में से बाहर धकेल दिया गया, तो हिंदुओं ने अपने देवी–देवता स्थापित कर लिये और उनके पत्थर के बुतों की पूजा करना आरंभ कर दिया। हिंदू पुरोहितों जो सदियों से धर्म और इसके उपदेशों के अपने आप बने हुए रक्षक थे, ने धर्म को रीति–रस्मों और अंधविश्वासी कर्मकांडों, जिनका कोई अर्थ भाव नहीं, के द्वारा धर्म को हास्यास्पद् बना दिया।

डा. राधाकृष्णन जो महान दार्शनिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति थे, लिखते हैं –

"हिंदु नेताओं ने जनता को, जो वहमों, भ्रमों और भौतिकवाद में डूबी हुई थी, आत्मिक सच्चाइयों की शिक्षा देने में असावधानी बरती। धर्म केवल जाति भेदभाव और खाने–पीने के प्रतिबंधों में उलझकर रह गया।"

हिंदू समाज जात–पात के सिलसिले के नीचे दब गया। धर्म केवल उच्च श्रेणी, जिन्हें ब्राह्मण कहते थे, का ही विशेष अधिकार बन गया। पवित्र धार्मिक ग्रंथों तक, न तो दूसरी श्रेणी के लोगों की पहुँच थी और न वे इन्हें समझ सकते थे, क्योंकि अधिकांश ग्रंथ संस्कृत में लिखे हुए थे और यह भाषा जनता की बोली नहीं थी। धार्मिक पाठ करने, लिखने और शिक्षा आदि देने पर केवल ब्राह्मणों का एकाधिकार था। निम्नों में भी सबसे नीच श्रेणी को अछूत कहा जाता था। इनका एक स्पर्श या छाया भी उच्च श्रेणी के लोगों को भ्रष्ट और अपवित्र प्रतीत होता था।

ऐसी हालत थी हिंदू–भारत की, जब पश्चिम की ओर से मुसलमान हमलावरों का भारी गिनती में एक के बाद एक आना शुरू हो गया। ग्यारहवीं सदी में गज़नी के महमूद से लेकर सोलहवीं सदी (गुरु नानक जी के समय) में मुगलों तक इन हमलावरों के लिए पंजाब हमेशा भारत का द्वार था। इन सभी मुसलमान हमलावरों ने बेरहमी से मर्दों, औरतों और बच्चों को क़त्ल किया, इनके घर बार लूट लिये, इनके मंदिरों को अपमानित किया और गिराया गया और इनके मंदिरों का धन आदि लूट लिया। हिंदुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया। प्रतिष्ठित विद्वान, सूफी, कवि और दार्शनिक जो इन हमलावरों के साथ ही आये थे, भारत के भिन्न–भिन्न हिस्सों में जाकर बस गये और उन्होंने 'भारतीय–मुस्लिम सभ्यता' की नींव रखी।

बहुत सारे मुसलमान इतिहासकारों ने उस समय में घटित हुई घटनाओं का वर्णन किया है। विजयी मुसलमानों ने हिंदुओं के साथ जो व्यवहार किया, उसके कुछेक उदाहरण हम नीचे दे रहे हैं :

गज़नी के राजा शहाबुद्दीन (1170–1206) ने दिल्ली और अजमेर के राजा पृथ्वीराज का बड़ी बेदर्दी से क़त्ल किया। उसने हजारों अजमेर वासियों, जिन्होंने उसका विरोध किया, को क़त्ल कर दिया और जो बच गये, उन्हें गुलाम बना लिया।

(असीर की 'कमिउत तवारीख़)

हसन निज़ाम–ए–नैशापुरी की 'ताज–उल–माअ सीर' में लिखा है कि जब कुतब–उ–दीन ऐबाक (1194–1210) ने मेरठ को फ़तह किया, उसने शहर के सारे मंदिर ध्वस्त कर दिये और उनकी जगह पर मस्जिदें बना दीं। अलीगढ़ शहर में उसने वहाँ के वासियों को तलवार के जोर पर मुसलमान बना दिया और जो अपने धर्म पर अड़े रहे, उन सभी को क़त्ल कर दिया।

अब्दुला वसफ अपनी 'तज्जीअत–उल–आमसार वा तजरीअत–उल– असर' में लिखता है कि जब अलाउद्दीन खिलजी (1295–1316) ने कैबे खाड़ी के सिरे पर बसा शहर कैबयत फ़तह किया, उसने इस्लाम की शान की खातिर सारे बालिग मनुष्य क़त्ल कर दिये, लहू के दरिया बहा दिये, देश की औरतों को उनके सारे सोने, चांदी, हीरों सहित उसने अपने घर भेज दिया और बीसेक हजार कुआँरी लड़कियों को अपनी निजी दासियाँ बना लिया।

अलाउद्दीन ने एक बार अपने काज़ी से पूछा कि हिंदू के लिए मुस्लिम कानून (शरीअत) में क्या निर्देश किया हुआ है। काज़ी ने उत्तर दिया, "हिंदू कीचड़ जैसे हैं, अगर उनसे चांदी मांगी जाए तो उन्हें सबसे अधिक झुककर सोना हाज़िर करना चाहिए। अगर एक मुसलमान एक हिंदू के मुँह में थूकना चाहता है तो हिंदू को इसके लिए मुँह चौड़ा करके खोल देना चाहिए। अल्लाह ने हिंदुओं को मुसलमानों का गुलाम होने के लिए बनाया है। पैगम्बर साहिब ने फ़रमान किया हुआ है कि अगर हिंदू मुस्लिम धर्म नहीं अपनाते तो उनको क़ैद करना, उन्हें कष्ट देना और अन्त में मार देना चाहिए और उनकी जायदाद जब्त कर लेनी चाहिए।"

सैय्यद मुहम्मद लतीफ अपनी 'पंजाब का इतिहास' पुस्तक में लिखता है – "उन दिनों में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच बहुत भारी ईर्ष्या और घृणा थी और सारी गैर–मुस्लिम आबादी मुसलमान राजाओं के अधीन थी।"

भाई गुरदास, एक सिख विद्वान लिखता है– "हे अकाल पुरुख, यह अजीब बात है कि कलयुग के लोगों ने अपना रवैया एक कुत्ते के समान बना लिया है और नाजायज़ रूप से लाई गई वस्तुओं को हड़प कर खुश हो रहे हैं। राजा पाप कमाते हैं और जो चरवाहे हैं, वे आप ही अपनी भेड़ों को मारे जा रहे हैं। लोग अनजान होने के कारण सच और झूठ में अन्तर करने में असमर्थ हैं। खुद को लोगों का भला करने वाला बताकर वे कपटी ढंग से धन इकट्ठा करने में लगे हुए हैं। स्त्री और पुरुष में प्यार भी धन के आधार पर है, वह अपनी मर्जी से मिलते हैं और जब चाहें अलग हो जाते हैं। काज़ी जो इन्साफ करने के लिए बैठे हैं, रिश्वत लेते हैं और फिर न्यायहीन फैसले देते हैं।"

गुरु नानक जी इस स्थिति को इस प्रकार बताते हैं :

"कलि काती राजे कासाई धरम पंख कर उडरिया।"

(श्लोक महल्ला 1, पृष्ठ 145)

यह हमेशा माना जाता रहा है कि संसार में से जब सच्चाई लुप्त हो जाती है और उसकी जगह झूठ पसर जाता है, तो ईश्वर की ओर से सन्देश आता है– इस धरती पर शान्ति और न्याय फिर से स्थापित करने के लिए। जैसे झूठ, कपट, अन्याय, जुल्म और कट्टरता के काले बादलों में से एक सूरज–किरन अर्शों में से आई, जैसा कि भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में वर्णन किया है :

"सुनि पुकार दातार प्रभ गुरु नानक जग माहि पठाया।
चरन धोई रहरासि करि चरणामष्तु सिखां पिलाया।
पारब्रह्म, पूरन ब्रह्म, कलिजुग अंदरि इक दिखाया।
चारे पैर धरम दे, चारि वरन इक वरनु कराया।
राणा रंक बराबरी, पैरी पवणा जगि वरताया।
उल्टा खेल पिरंम दा, पैरा उपरि सीस निवाया।
कलिजुग बाबे तारिया, सतिनामु पढ़ि मंत्र सुनाया।
कलि तारणि गुरु नानक आया ।। 23 ।।
सतिगुर नानक प्रगटिया, मिट्टी धुंधु जगि चानण होया।
जिउ करि सूरज निकलिया, तारे छपे अंधेरु पलोया।
सिंघ बुके, मिरगावली भन्नी जाई, न धीर धरोया।
जिथे बाबा पैर धरै, पूजा आसणु थापणि सोया।
सिध आसणि सभि जगत दे, नानक आदि मते जे कोया।
घरि घरि अंदरि धरमसाल, होवै कीरतनु सदा विसोया।
बाबे तारे चारि चकि, नउखंडि पष्थमी सचा ढोया।
गुरमुखि कलि विचि परगट होया।। 27 ।।

(भाई गुरदास, वार पहली)

दबे–कुचले जा रहे लोगों की चीखें और अरदासें अकाल पुरुख ने अंत में सुन लीं और मनुष्य जाति का रक्षक, शान्ति का पैगम्बर, अर्शी प्यार का सोता और गुणों का सागर गुरु नानक, सिख धरम की नींव रखने वाला प्रगट हुआ।